Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 5, Print Issue 1&2 - 2020, Pg. No. 4-6
Peer Reviewed Journal

Research Article

महाभारत में पर्यावरण पर दार्शनिक चिन्तन

Rameshwar Pandey

Assistant Professor, Department of Ancient History, National Post Graduate College, Barhalganj Gorakhpur, Uttar Pradesh, India.
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202002

I N F O

E-mail Id:
rameshwarnpg@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0001-2969-6174

Date of Submission: 2020-03-20
Date of Acceptance: 2020-04-28

सारांश

इस लेख में लेखक ने महाभारत काल के दौरान पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर गहराई से प्रकाश डाला है। एक दार्शनिक दृष्टिकोण के माध्यम से, लेखक उस अवधि की पर्यावरणीय चुनौतियों का एक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्राचीन महाकाव्यों पर प्रकाश डालने से इस बात पर गहन चिंतन उभरता है कि उस युग का समाज किस प्रकार पर्यावरणीय समस्याओं से जूझता था। लेखक महाभारत काल में प्रचलित पर्यावरण लोकाचार की एक ज्वलंत तस्वीर पेश करता है, जो प्रकृति के प्रति लोगों की मानसिकता में पुनर्मूल्यांकन की एक समृद्ध रूपरेखा पेश करता है। साथ ही लेखक उस समय की पर्यावरणीय चेतना को प्रभावी ढंग से सामने लाता है, तथा पारिस्थितिक विचार के संदर्भ में अतीत और वर्तमान के बीच एक पूल बनाता है। प्राचीन भारतीय समाज में पर्यावरणीय चुनौतियों का चित्रण हमारी वर्तमान पर्यावरणीय दुर्दशाओं और समय के साथ पर्यावरणीय विचारों के विकास को प्रतिबिंबित करने के लिए एक मूल्यवान पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

मुख्य बिंदु: महाभारत, पर्यावरण, वन पर्व, धर्मपुत्र, अग्नि, वृक्ष, मानवता।

पर्यावरण समस्या से पूरा विष्व संत्रस्त है। इससे सम्पूर्ण मानव जाति एवं जीव–जन्तु पीड़ित हैं और प्राक्तिक सम्पदा भी निरन्तर प्रभावित होकर विनाश की ओर आगे बढ़ रही है। पर्यावरण समस्या के कारण प्रतिवर्ष लाखों मानव का अन्त हो रहा है। इनसे मुक्ति पाने के लिए पूरा विश्व प्रतिवर्ष अरबों रुपये व्यय कर रहे हैं फिर भी पर्यावरण समस्या से मुक्ति का कोई उपाय नहीं दिखाई देता।

प्राबीन भारत में पर्यावरण समस्या कहीं नहीं थी। जड़ चेतन जगत सुरक्षित था। प्राचीन ऋषि एवं चिन्तक विद्वान सभी पर्यावरण के प्रति पूर्णतः जागरुक थे। ऋषियों ने वनों में गुरुकुल के माध्यम से पर्यावरण चेतना का प्रसार अपनी शिष्यों के माध्यम से जन–जन तक फैलाते थे। प्राचीन भारत में यज्ञ पूजा पद्धति सर्वत्र प्रचलित थी। राजा, गृहस्थ, वानप्रस्थी एवं सन्यासी सभी यज्ञ के द्वारा वायु को शुद्ध रखते थे। वनस्पति जगत और पशु जगत को पुत्रवत् मानकर उनका पालन और संरक्षण किया जाता था।

महाभारत में वर्णित घटनाएं भी अपने देशकाल की सीमाओं से प्रभावित हुई हैं। महाभारत की रचना महर्शि वेद व्यास के द्वारा की गयी है। वेदव्यास ने महाभारत में पर्यावरण का चित्रण अनेकषः किया है। महाभारत में प्राकृक्तिक दशाओं, मानव समाज आदि का ज्ञान प्राप्त होता है। इसमें कण्व परशुराम, व्यास आदि आचार्यों के आश्रम का वर्णन है। महाभारत में पाण्डवों का वनवाश, कुरुक्षेत्र का युद्ध, युद्ध के उपरान्त पाण्डवों की हिमालय यात्रा तथा विभिन्न क्षेत्रों के प्राकृतिक तथ्यों, धर्म स्थानों, नदियों, तालाबों, पर्वतों, वनों, पशु–पक्षियों आदि का वर्णन मिलता है। जो महाभारत कालीन पर्यावरण को सूचित करता है। महाभारत में मुख्यतः वीरों के जय–पराजय की कथा ही प्रधान विषय है। महाभारत में सामान्यतः प्रकृति सम्बन्धी वर्णन कम है लेकिन प्रकृति सम्बन्धी जो भी प्रमाण प्राप्त हुये हैं वह तत्कालीन मानव को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित किये हैं।

महाभारत के वन पर्व में प्रकृक्ति वर्णन के रुप में एक स्थान पर गन्धमादन पर्वत का वर्णन है– तब उन्होंने सिद्धों व चारणों से से. वित, किन्नरों के आवास स्थल गन्धमादन पर्वत को देखकर उनका रोम–रोम हर्ष से खिल उठा। उस पर्वत पर विद्याधर तथा किन्नरियां क्रीड़ा विहार करते थे तथा झुंड के झुंड हाथी, सिंह और व्याघ्र बसते थे। छोटे हाथियों के शब्द से गुञ्जायमान, तरह–तरह के पशुओं से सेवित, नन्दन वन के समान हृदय को आनन्द देने वाले श्रेष्ठ गन्यमादन के वन में मुदित पाण्डुपुत्रों ने क्रमशः प्रवेश किया। इसी प्रकार महाभारत में भी प्रकृति से सम्बन्धित ऐसे चित्रण मिलते हैं

Copyright (c) 2023: Author(s). Published by Advanced Research Publications

जिसमें प्रकृति की क्रिया या उसकी स्थिति का अतिसूक्ष्म चित्रण किया गया है। यथा ''पक्षियों के मुख से निःसृत सुन्दर व मधुर, श्रवण सुखद, मादक प्रथा मोदजनक शुभ शब्द सुनते हुए, सभी ऋतुओं के पुष्पों एवं फलों से सुशोभित भारावनत वृक्षों को देखते हुए आम, आमड़ा, भव्य नारियल, तेन्दू, मुञ्जातक , अञ्जीर, अनार, नीबू, कटहल, बड़हर, केला, खजूर (आदि को वहाँ देखा) चकोर, शतपत्र (मोर) भृङ्गराज, शुक, कोयल..... चातक आदि पक्षियों से जो मधुर कुंजन कर रहे थे, ... चारो ओर जलचर जन्तुओं से भरे सुन्दर सरोवरों को, जिसमें कुमुद, पुंडरीक, कोकनद, उत्पल, कल्हार तथा कमल सव ओर भरे थे (उन्होने देखा)। उन्होने सुन्दर हरसिंगार पौधों को देखा जो कामदेव के तोमर नामक बाण जैसे प्रतीत होते थे। उन्होने सुन्दर तिलक वृक्षों को देखा जो वनराजियों के ललाटों में रचित मनोरम तिलकों के समान दिख रहे थे, वैसे ही मञ्जारियों से शोभित कामदेव के बाणों की सी आकृति वाले आम के वृक्षों को देखा।[1]

इसी प्रकार पर्यावरण एवं मानव जीवन में औषधियों की महत्त्व महाभारत में उल्लिखित है। मानव की सदैव यही कामना रही है कि औषधि और वनस्पतियां शान्तिदायक हैं अर्थात् वे पर्याप्त मात्रा में हो और पर्यावरण को संरक्षित कर मानव को शान्ति प्रदान करें। जीवन में वृक्षों की उपादेयता के कारण ही महाभारत में संसार को पीपल का वृक्ष कहा गया है जिसके मूल में शिव है, शाखा ब्रह्मरूप हे और वेद जिसके पर्ण हैं।[2] वनस्पति औषधियां सूर्य के प्रकाश में भोजन बनाने की प्रक्रिया के अन्तर्गत निरन्तर प्राणवायु अर्थात् आक्सीजन का उत्पादन करते हैं और विषैलीतथा दूषित वायु अर्थात् कार्बन–डाई आक्साइड का अवशोषण करते है। पर्यावरण सन्तुलन के लिए महाभारत में वृक्षों को धर्मपुत्र मानकर इनको संरोपण व संवर्धन को श्रेयष्कर बताया गया है।[3] यहाँ वृक्षों को सजीव व चेतन स्वीकार किया गया है।[4] तथा कहा गया है कि वृक्षों को भी सुख–दुःख का अनुभव होता है और कट जाने पर उसकी खण्डित शाखायें पुनः बढ़ जाती हैं। अतः उनमें जीव की सत्ता मानी जाती है।

ईश्वर ने अनेक प्रकार के देवता, साध्य, मनुष्य, पशु–पक्षी की रचना किया है लेकिन इन सबमें मानव अपने विशिष्ट गुणों के कारण श्रेष्ठ है। अतः मानव पर्यावरण का केन्द्र बिन्दु है इसीलिए महाभारत में सम्पूर्ण सृष्टि में मनुष्य को श्रेष्ठ माना गया है।[5] मानव ही अपने व्यवहार से पर्यावरण को अपने अनुकूल विकसित करने की क्षमता रखता है अथवा उसे प्रदूषित कर नष्ट भी कर सकता है। महाभारत में कहा गया है कि संसार में सर्वत्र प्राणों का स्पन्दन है चाहे जल हो या स्थल हर चीज में प्राण होते हैं। फल–फूल, पेड़–पोधे सबमें प्राणों का आस्तित्व है। महर्षि भारद्वाज ने मृगु से पूछा कि वृक्ष लता आदि का शरीर पंचभौतिक होता है कि नहीं। पेड़–पौधों के शरीर में तेज, वायु व आकाश का कार्य किस प्रकार होता है। यह न समझ पाने के कारण भारद्वाज को सन्देह हुआ था। वृक्षादि को श्रवण, स्पर्श, रस, गन्ध व दर्शन की अनुभूति नहीं होती तो इनका शरीर पंचभौतिक कैसे होगा। यही उनके सन्देह का कारण था। इस प्रश्न के उत्तर में भृगु ने कहा कि यद्यपि वृक्षादि शरीर के सुक्ष्म अवयव अर्थात् परमाणु बहुत ही घने हैं तब भी उनके अन्दर आकाश है इसमें कोई सन्देह नहीं। आकाश या अवकाश नहीं होता तो फूल और फल का जन्म नहीं हो सकता था। पत्ते,छाल, फूल सभी एक समय म्लान हो जाते हैं। इससे पता लगता है कि वृक्षादि में तेज पदार्थ है। उनकी म्लानता व शीर्णता को देखकर स्पर्शानुभूति का अनुमान लगाया जा सकता है। वायु के स्पर्श, अग्नि के ताप तया बज्र के निर्घोष से फल व फूल विशीर्ण हो जाते हैं। इससे ज्ञात होता है कि वृक्षादि में सुनने की भी शक्ति है। दूरस्थ लता भी अपने अवलम्ब्य वृक्ष की ओर अग्रसर होती है। इससे उसकी दृष्टि का अनुमान लगाया जा सकता है। अनेक प्रकार के गन्च द्रव्यों व दीप–धूप के सुवाष से पेड–पौधों के रोग नष्ट हो जाते हैं। अतः उनमें गन्ध ग्रहण करने की क्षमता भी अवश्य है। जड़ों द्वारा जल ग्रहण करने की शक्ति भी इनमें होती है। कुछ वृक्ष पानी डालने से सूख जाते हैं। इसके विपरीत बहुत से वृक्ष पानी मिलते ही हरे हो जाते हैं। इससे उनकी रसनेन्द्रिय के आस्तित्व का पता चलता है। सुख–दुःख की अनुभूति एवं छिन्न शाखा आदि का पुनः निकलना देखकर पेड़–पौधों के जीवन का अनुमान लगाया जा सकता है। अग्नि एवं बायु वृक्ष के जल आदि खाद्य को रस में बदल देती है। इसी से इनकी पुष्टि होती है। जंगम (चल) प्राणियों की देह में जिस प्रकार पंचभूत का अनुभव किया जाता है उसी प्रकार स्थावर (स्थिर) प्राणीयों में भी पंचभूत की लीला चलती रहती है। स्थावर प्राणी छः श्रेणियों में विभक्त है। यथा वृक्ष, गुल्म (तना), लता, बल्ली, त्वकसार व तृण। इनके रोपण व परिवर्धन के अगणित पुण्यफल प्राप्त होते है ऐसा महाभारत में उल्लिखित है।[6] इनको पूत्र की तरह पालने का उपदेष दिया गया है।[7] अतः यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि महाभारत के तत्ववर्शी पर्यावरण चिन्तन पर विशेष ध्यान देते थे तथा पर्यावरण सम्बन्धी गूढतम रहस्यों से लोगों का ध्यान आकर्षित करने का महती प्रयास किया है।

निष्कर्ष:

इस लेख में लेखक ने महाभारत में पर्यावरण पर अपने दार्शनिक चिंतन को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस लेख में महाभारत काल के दौरान ऋषि–मुनियों और तपस्वियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए किए गए सभी प्रयासों के बारे में विस्तार से बताया है। इसके अलावा, लेखक ने पेड़ों की संवेदी गतिविधियों पर हमारे ध्यान की सफल परिणति पर जोर देते हुए पेड़ों की संवेदी धारण ाओं की ओर प्रभावी ढंग से हमारा ध्यान आकर्षित किया है। लेखक मानवता और पर्यावरण के बीच सहजीवी संबंध को भी उजागर करता है, और इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे प्रकृति का संरक्षण पूरे इतिहास में हमारे अस्तित्व का एक अभिन्न अंग रहा है। इसके अतिरिक्त, लेखक पर्यावरण संरक्षण के महत्व को रेखांकित करने के लिए महाभारत के पात्रों द्वारा अपनाई गई विभिन्न पारिस्थितिक प्रथाओं पर प्रकाश डालते हैं। महाभारत में चित्रित पर्यावरणीय पहलुओं के गहन विश्लेषण के माध्यम से, लेखक प्रकृति संरक्षण के महत्व और सभी जीवित प्राणियों के सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व के बारे में एक शक्तिशाली संदेश देता है।

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202002

संदर्भः

1. महाभारत, वनपर्व, 158.38–68 तक
2. वही, भीष्मपर्व, 2.19
3. वही, अनुशासन पर्व, 5.30–31
4. वही, शान्तिपर्व, 185.5–18
5. वही, शान्तिपर्व, 180.2
6. बही, अनुशासन पर्व, 58.22–26
7. वही, अनुशासन पर्व, 58.27

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202002